गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/IDC/1252/2018-2020

सेवा में,

golalariya.darshan@gmail.com
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है -
www.golalariya.com
9406744064

मासिक
गोलालारीय दर्शन
अपनों के साथ अपनी बातें

लेट पोस्टिंग

सफलता के 10 वर्ष

विवाह योग्य प्रत्याशी परिचय विशेषांक

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं । हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं ।

वर्ष : 9 अंक : 12 पृष्ठ संख्या : 20 माह - 15 अक्टूबर 2018 सहयोग राशी 1100/- देकर सदस्य बनें ।

क्षमा की शुरुआत स्वयं से

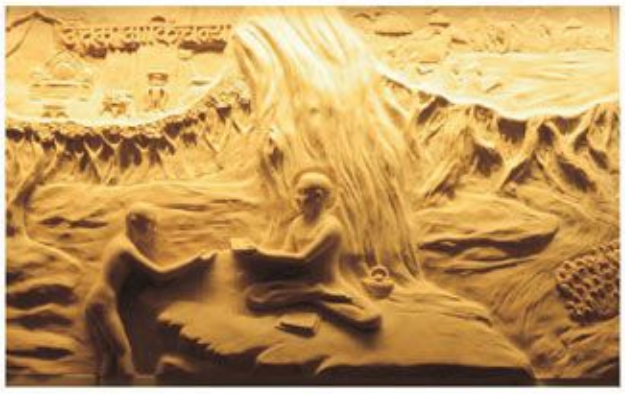

हमारी संस्कृति के प्रमुख पर्व 'क्षमापर्व' को क्षमावाणी भी कहते है । यह एक ऐसा पर्व है जिसमें शुभकामना, बधाई, उपहार न देकर सभी जीवों से अपने द्वारा जाने-अनजाने में किए गए समस्त अपराधों के लिए क्षमायाचना करते है । क्षमा करने और क्षमा मांगने के लिए विशाल हृदय की आवश्यकता होती है । तीर्थंकरों ने विश्व में शांति की स्थापना के लिए सूत्र दिया है - 'मैं सभी जीवों को क्षमा करता हूँ । सभी जीव मुझे भी क्षमा करें। मेरी सभी जीवों से मैत्री है । किसी से भी मेरा कोई वैर-भाव नहीं है ।'

क्षमावाणी का पर्व सौहार्द्र, सौजन्यता और सद्भावना का पर्व है । इस दिन एक दूसरे से क्षमा मांगकर अपने अपराधों को धोया जाता है । मानवता जिन गुणों से समृद्ध होती है उनमें क्षमा प्रमुख और महत्वपूर्ण है। कषाय (बुराइयां) के आवेग में व्यक्ति विचार शून्य हो जाता है । वह हित-अहित का विवेक खोकर कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाता है। लकड़ी में लगने वाली आग जैसे दूसरो को तो जलाती ही है, पर स्वयं अपने आपको भी जलाती है । इसी तरह समय पर कषाय पर विजय पा लेना ही क्षमा धर्म है।

क्षमा को सभी धर्मों और संप्रदायों में श्रेष्ठ गुण करार दिया गया है । हमारी संप्रदाय में इसके लिए एक विशेष दिन का आयोजन क्षमावाणी के रुप में किया गया है । मनोविज्ञान भी क्षमा या माफी को मानव व्यवहार का एक अहम हिस्सा मानता है । क्षमावाणी पर्व हमारी वैमनस्यता, कलुषता, दुश्मनी एवं आपस की तमाम टकराहटों को समाप्त कर जीवन में प्रेम, स्नेह, वात्सल्य, प्यार, आत्मीयता की धारा को बहने का नाम है । हम अपने कषायों को छोड़ें । बुराइयों को समाप्त करें । बदले-प्रतिशोध की भावना को नष्ट करें । नफरत, घृणा, द्वेष बंद करें । आपसी झगड़ों, कलहों को छोड़े । अनुसंधानकर्ताओं ने यह निष्कर्ष निकाला है कि लंबे समय तक मन में बदले की भावना, ईर्ष्या-जलन और दूसरों का अहित का चिंतन और प्रयास करने पर मनुष्य भावनात्मक रुप से बीमार रहने लगता है । जीवन में जब भी कोई छोटी-बड़ी परेशानी आती है, तब व्यक्ति अपने मूल स्वभाव को छोड़कर पतन के रास्ते पर चल पड़ता है। यह सही नहीं है । हर व्यक्ति को आत्मचिंतन करने के बाद सत्य का रास्ता ही अपनाना चाहिए । हमारी आत्मा का मूल गुण क्षमा है । जिसके जीवन में क्षमा आ जाती है, उसका जीवन सार्थक हो जाता है । क्षमायाचना और क्षमादान चाहे दो आत्मीय जनों के बीच हो अथवा समूहों के बीच, यदि ईमानदारी के साथ क्षमायाचना की जाती है, तो यह अपमान की भावना का निराकरण करती है । क्षमा में बहुत बड़ी शक्ति होती है । क्षमा का जीवन में बहुत बड़ा महत्व है । अगर कोई इंसान कभी कोई गलती हो जाने के बाद उसके लिए माफी मांग ले तो सामने वाले का गुस्सा काफी हद तक दूर हो जाता है । जिस तरह क्षमा मांगना व्यक्तित्व का एक अच्छा गुण है, उसी तरह किसी को क्षमा करन देना भी इंसान के व्यक्तित्व में चार चांद लगाने का काम करता है । क्षमा ने ही मानव जाति को नष्ट होने से बचाया है । क्षमा करने की प्रक्रिया में क्षमा करने वाला क्षमा पाने वाले से कहीं अधिक सुख पाता है । यदि आप किसी की भूल को माफ करते है, तो उस व्यक्ति की सहायता तो करते ही है, साथ ही स्वयं की सहायता भी करते हैं। वास्तव में क्षमा की अवधारणा स्वयं से आरंभ होती है, हमें लगता है कि हम एक दूसरे को क्षमा करते हैं अथवा नहीं करते, पर वास्तविकता यह है कि क्षमा की समस्त प्रतिक्रियाएँ स्वयं पर लागू है । जैसे-जैसे हम इस क्षमाशीलता के मार्ग पर अग्रसर होते हैं, इसके सुपरिणामों में सुखानुभूति के साथ ही तनावमुक्त जीवन की प्राप्ति होती है । क्षमा सद्गुण का संवाद है, क्षमा अहिंसा का अनुवाद है ।

- सुनील जैन संचय, ललितपुर

प्रासंगिक है परिचय पुस्तिका व परिचय सम्मेलन

आज की भाग दौड़ भरी जिंदगी में जहां अपने जीने के लिए भी समय कम पड़ रहा है वहां किसी से यह उम्मीद हो कि वह हमारे बच्चों के लिए योग्य वर-वधू को तलाश करके देगा, तो यह अपने आपको समझाने की कोशिश ही है । हमें अपने बच्चों के लिए योग्य प्रत्याशी का चयन आधुनिक युग में प्रचलित माध्यमों के द्वारा स्वयं ही सतत करना होता है । इस कार्य में अनेक शहरों से प्रकाशित विवाह योग्य प्रत्याशियों की परिचय पुस्तिकाएं व परिचय सम्मेलन बहुत अधिक सहायक सिद्ध हो रहे है । एक ही पत्रिका में अनेक प्रत्याशियों की जानकारी अभिभावकों के लिए प्रत्याशी चयन में सहायक सिद्ध हो रही है । शादी विवाह की ऑनलाईन जानकारियों की अनेक वेबसाइट मौजूद है । जो 2000 रु. से 50000 रु. तक की राशि लेकर प्रत्याशियों की जानकारियां दे रहे है जिसे सिर्फ नये बच्चे ही संचालित कर पाते है । 60-70 के दशक में जन्मे अभिभावकों के लिये यह सुविधा थोड़ी असहज व अविश्वसनीय है । कई बार इन वेबसाइटों की धोड़ाधड़ी के समाचार हम सभी पढ़ते ही है ।

आजकल कुछ एजेंसियां जो जबलपुर, इन्दौर व भोपाल से संचालित हो रही है । घर बैठे बर बधू की जानकारियां देने का दावा कर रही है इन एजेंसी की लड़कियां शहरो में संपन्न हुए परिचय सम्मेलन पुस्तिका हासिल कर उन्हीं डाटा के आधार पर आपको फोन लगाते है कि आपके बच्चे के लिए हमारे पास कई योग्य प्रत्याशी है आप हमारे यहां रजिस्ट्रेशन करा लेंगे तो आपको विवाह होने तक कई प्रत्याशियों की जानकारी हम देते रहेंगे, इसकी फीस भी 1000 रु. से 10000 रु. तक की रहती है । फीस भरते ही आपको तबज्जों देना कम कर देते हैं तब आप अपने आप को ठगा सा महसूस करते है ।

वर्षों पूर्व विवाह आयोजन 3-4 दिन के होते थे, तब सभी रिश्तेदारों के पास चर्चा का पर्याप्त समय रहता था बच्चों के बारे में जानकारियों का आदान प्रदान होता था माता पिता जानबूझकर विवाह योग्य बच्चों को अपने साथ ऐसे अवसरों पर लेकर जाते थे ताकि अन्य नाते रिश्तेदार बच्चों को देख ले और भविष्य में उनके बारे में अपनी धारणा का निर्धारण कर सके । यह एक बच्चों के परिचय का सुनहरा अवसर माना जाता था ।

आज विवाह प्रसंगों में आप देखेंगे कि बच्चों तो दूर की बात, बच्चों के माता पिता भी अपनी व्यस्तता बताकर स्वयं नहीं जाते है रिश्तेदारी निभाने के लिए अपने माता पिता अर्थात बच्चों के दादा दादी विवाह कार्यक्रम में शिरकत को आते है जो मात्र अपने कर्त्तव्य का निर्वाह कर चले जाते है। एक दिन की शादी में यदि बच्चों के माता पिता आते भी है तो कुछ समय या तो आयोजन स्थल पर अपने कमरों में आराम कर गुजार देते है या उस शहर में निवासरत अपने निकटतम रिश्तेदार से मिलने जुलने में समय पूरा कर लेते है । हम स्वयं ही सोचे कैसे और किस तरह से हम बच्चों के विवाह की चर्चा कर सकेंगे और फिर युवा पीढ़ी का व्यवहार कुछ ऐसा होता जा रहा है कि वे सिर्फ, निकटतम रिश्तेदारों के यहां के विवाह आयोजन में जाते है, वो भी कुछ समय के लिए ।

विवाह आयोजन जो पहले कभी अन्य बच्चों के संबंधों की रुप रेखा का माध्यम बनते थे आज मात्र हम सबकी लापरवाही से एक रस्म अदायगी के आयोजनों में बदलते जा रहे है। याद रखे यदि हमने अपने व्यवहार में बदलाव नहीं लाते है तो हमारे बच्चों या उनके बच्चों के लिए संबंध तलाशने के लिए हमें सिर्फ इन्हीं माध्यमों पर निर्भर होना पड़ेगा ।

वर्तमान में विवाह परिचय पुस्तिका व सम्मेलन बहुत अधिक प्रासंगिक होते जा रहे है । अभिभावकों को इन पत्रिकाओं में अपने बच्चों के बायोडाटा पत्रिका के महत्तानुसार अवश्य देना चाहिए । यदि हम अपने बच्चों का संबंध अपने ही समाज में करने के इच्छुक है तो अपने समाज की परिचय पुस्तिका में बायोडाटा अवश्य ही देवें। यदि समग्र जैन समाज में विवाह संबंध की भावना रखते है तो जो पत्रिका सर्वश्रेष्ठ परिणाम देती है उसमें बायोडाटा अवश्य देना चाहिए। अपने बच्चों को बायोडाटा प्रकाशित नहीं करा कर आप सोचें कि हम पत्रिका खरीद कर जानकारी प्राप्त कर लेंगे तो आप स्वयं को धोखा दे रहे है सोचें कि आपके बच्चों की जानकारी अन्य परिवारों को कैसे मिल पायेगी ? कुछ रुपये बचा कर आप स्वयं

बच्चों के साथ न्याय नहीं कर रहे है । कुछ लोगों की सोच होती है कि अपने बच्चों का बायोडाटा प्रकाशित करने से उनकी साख (गुडविल) कम हो जावेगी, वे भ्रम में है वे यह विचार नहीं कर रहे है कि बायोडाटा नहीं देने से साख बढ़ नहीं, घट रही है क्योंकि इस दौर सिर्फ इन्हीं माध्यम से सरलतापूर्वक अपने बच्चों का विवाह प्रस्ताव को आगे बढ़ा सकेंगे । घर घर रिश्तेदारों के द्वारा अपने बच्चों का बायोडाटा भेजने का जमाना अब नहीं रहा। अब वो समय नहीं है कि प्रस्ताव पहले लड़की वालों की ओर से आये ।

आज हम गर्व से कह सकते है कि गोलालारीय दर्शन के माध्यम से हम नाम मात्र के शुल्क पर विवाह योग्य प्रत्याशियों के बायोडाटा गत आठ वर्षों से सतत प्रकाशित करते आ रहे है । वर्ष 2013 में पत्रिका के माध्यम से प्रतिवर्ष विवाह विशेषांक का प्रकाशन भी किया गया है जिसमें वर्ष 2015 व 2017 को **"प्रयास रिश्तों को जोड़ने का"** विवाह परिचय पुस्तिका को काफी सराहा गया है । हमारी छोटी सी कोशिश के माध्यम से अनेक संबंध तय हुए है अनेक अभिभावकों ने उनके विवाह अवसर के फोटो गोलालारीय दर्शन पत्रिका में प्रकाशित कराकर इस पत्रिका को आर्थिक सहयोग देकर संबल प्रदान किया है । हम आप सभी से यह आशा करते है कि जब भी आपके परिवार में कोई मांगलिक आयोजन हो तो उस शुभ अवसर को यादगार बनाने के लिए समाज की एकमात्र पत्रिका **"गोलालारीय दर्शन"** को अवश्य याद रखे ।

शेष पृष्ठ 2 पर....